'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ५१ | वाराणसी, गुरुवार, ३० अप्रैल, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

समाना (पटियाला) २२-४-'५९

सबका स्वार्थ एक करने की योजना

आज सुबह हमने बड़ी बात बतायी थी। आर्यसमाज के मन्दिर पर हमने ऋग्वेद का यह प्रसिद्ध वचन पढ़ा था—"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।" उसीका अर्थ समझाते हुए हमने सुबह कहा था कि उसका दुहरा अर्थ होता है। एक तो यह कि विश्व को हम आर्य बनायें। अपनी संस्कृति और सभ्यता को कुल विश्व का प्रतिनिधि बनायें। दूसरा यह कि दुनिया भर के अच्छे विचार अपनी सभ्यता में ले लें और अपनी सभ्यता के अच्छे विचार दुनिया को दे दें। इन दिनों, जब से विज्ञान खूब बढ़ा है, देश-देश के बीच दीवालें नहीं रह सकतीं। अतः विचार भी इधर से उधर जाने और उधर से इधर आने में रुकावट नहीं होनी चाहिए। इसलिए भारत के बाहर के विचार भारत में लाकर भारत को विश्वमय बनाया जाय। इसी तरह यहाँ के अच्छे विचार विश्व में भेजकर विश्व को भारतमय बना दें। यहाँ के अच्छे विचार बाहर भेजे जायँ और बाहर के अच्छे विचार यहाँ लिये जायँ। इसका यह भी अर्थ होता है कि बुरे विचार बाहर से यहाँ न आने दें और यहाँ के बुरे विचार बाहर न जाने दें। किसी तमद्दुन ने, सभ्यता ने अच्छाइयों का ठेका नहीं लिया है। हर संस्कृति में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ होती ही हैं। इसीलिए बाहरी देशों की अच्छाइयाँ हम लें और बुराइयाँ छोड़ दें। साथ ही अपने देश की बुराइयाँ भी छोड़ें—उन्हें पकड़ न रखें। मेरे पेट में रोग है, तो 'अपना रोग' कहकर उससे प्यार नहीं करना चाहिए। लेकिन अक्सर लोग बुराइयों से चिपके रहते हैं, छोड़ते नहीं। इसी तरह अच्छी चीज बाहर की होने मात्र से उसे न लेना भी ठीक नहीं। अच्छाइयों और बुराइयों में स्थानीय और बाहरी का भेद नहीं करना चाहिए। अच्छाइयों का, फिर वे कहीं की भी हों, संग्रह करना चाहिए। इसी तरह बुराइयाँ कहीं की भी हों, हटानी चाहिए। जो यह काम करेंगे, वे सर्वोदय का काम करेंगे।

सर्वोदय की व्याख्या

सर्वोदय का अर्थ है—सबका भला, किसीका किसीसे विरोध नहीं। इसमें अच्छाइयों का संग्रह, बुराइयों का मिटाना और किसी का विरोध न करना आता है। किन्तु आज सर्वत्र परस्पर हितों में विरोध दीखता है। सर्वत्र विरोध दीखता है—मालिक और मजदूर, शहर और देहात, ऊँची जमात और नीची जमात के बीच विरोध होता है। यहाँ तक कि स्त्रियों और पुरुषों में भी विरोध चलता है। इन दिनों परस्पर विरोध की बात चलती है, कशमकश चलती है, फिर भी रूस के लोग 'शान्ति-शान्ति' चिल्लाते हैं, क्योंकि शस्त्रास्त्रों ने कसम नहीं खायी है कि हम दुर्जनों के हाथ में हरगिज नहीं रहेंगे, सज्जनों के ही हाथ में रहेंगे। अगर ऐसी कसम शस्त्रास्त्रों ने खायी होती, तो मुझे कोई उज्र नहीं था। लेकिन बेचारे ऐसे मूढ़ होते हैं कि वे दुर्जनों के हाथ में ही रहते हैं और उन्हींके हाथ में ज्यादा कारगर होते हैं। सज्जनों के हाथों में कारगर नहीं होते। मेरे हाथ में तलवार आयेगी, तो उसका उपयोग करने में मेरा हाथ हिचकिचायेगा। परन्तु दुर्जन का हाथ उसका ठीक उपयोग करेगा, उसे हिचकिचाहट नहीं होगी।

'किरपाण' कृपा के प्रतीक बनें

इन दिनों अणु अस्त्रों का भारी ढेर अमेरिका के पास हो गया है और रूस के पास भी। दोनों समझ गये हैं कि उस शक्ति के बल पर आवाहन करने से कोई लाभ नहीं। लेकिन अभी यह पूरा ध्यान में नहीं आया है। उस शक्ति की अब नहीं चलेगी, यह वे अभी पूरा नहीं समझे हैं। उस हालत में परस्पर विरोध करते रहें, तो दिमाग खो देंगे। जहाँ दिमाग खोया, जहाँ क्षोभ हुआ, वहीं शस्त्रों की चलेगी। आज मनुष्यों के हाथों में शस्त्र नहीं रहे हैं, शस्त्रों के हाथ में मनुष्य हो गये हैं।

आइन्स्टाइन बहुत बड़े वैज्ञानिक थे। उन्होंने एक दफा हिंसक शस्त्रों की खोज की। बाद में पश्चात्ताप हुआ। मरते समय उन्होंने जाहिर किया कि ऐसे शस्त्रास्त्रों का सज्जनों को विरोध करना चाहिए। आज शस्त्रास्त्र भयानक हो गये हैं। ये 'किरपाण' नहीं रहे हैं। जो कृपा करेंगे वे 'किरपाण' होंगे। इसलिए वे बेकार हो गये हैं। शिवाजी के और राणा प्रताप के जमाने में उन्होंने किले बनाये। आज भी आप किले बनायेंगे, तो बस-वालों को बहुत आसान होगा। एक जमाने में किरपाण से बचाव हुआ था, परन्तु आज उसके दिन लद गये हैं। इसलिए किरपाण को प्रेम का और करुणा का प्रतीक बनाना चाहिए। इसीलिए पंजाब की पहली ही सभा में मैंने कहा था कि

आज शस्त्र वही होगा, जो निर्भय, निर्वैर होगा। भय बढ़ेगा, तो मनुष्य निर्वैर नहीं हो सकेगा। वैर बढ़ा तो निर्भयता नहीं आयेगी। आज वैर बढ़ा है, इसलिए ऐसे शस्त्रास्त्र बढ़े हैं; भय भी बढ़ा है। परन्तु इससे दुनिया का खातमा होगा।

इसलिए भाइयो, आज इस बात की जरूरत है कि एक दूसरे के स्वार्थ एक दूसरे से विरुद्ध न हों। आज जो चिंतन चल रहा है, उसमें इसका उससे विरोध, उसका इससे विरोध, चल रहा है। ट्रेड यूनियन बनते हैं, मालिकों के खिलाफ। विद्यार्थियों के यूनियन बनते हैं, शिक्षकों के खिलाफ। अजीब-सी बात है। मैं कई दफा कहता हूँ कि अब 'अ० भा० बेटा-संघ विरुद्ध अ० भा० बाप-संघ' बनना ही बाकी रहा है। फिर वे बेटे बाप बन जायँगे, तो कौन से संघ में रहेंगे, यही सवाल उनके सामने आयेगा। यह बिल्कुल हास्यास्पद हो जाता है। ऐसे छोटे-छोटे स्वार्थ एक दूसरे से विरुद्ध होते हैं। हाथ के विरुद्ध उँगलियाँ हो जायँ, तो आज जो हजारों काम हाथ करते हैं, वे नहीं कर सकेंगे। पर पाँचों अँगुलियाँ मिलकर हजारों काम करती हैं। इसीका नाम सर्वोदय है।

सर्वोदय में हम इसी तलाश में, इसी खोज में हैं कि सबका भला हो। किसीका स्वार्थ किसीके विरुद्ध न हो। इसका एक ही उपाय है—विकेन्द्रित योजना! आज पब्लिक सेक्टर के नाम पर सभी उद्योग-धंधे सरकार के हाथ में जा रहे हैं। जैसे रेलवे का राष्ट्रीकरण हो गया है। इससे बहुत अच्छा हुआ, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता। इसके विपरीत विकेन्द्रित योजना से एक-दूसरे के साथ विरोध नहीं आयेगा। हर ग्राम में ग्राम-सभा होगी। एक ग्राम एक स्वतन्त्र इकाई होगा। ग्रामों के बीच सहयोग रहेगा। सबसे ऊपर नैतिक सत्ता रहेगी। ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता नीचे रहेगी और ऊपर कम सत्ता होगी। नैतिक अधिकार, सह-अस्तित्व का काम रहेगा। इससे पंजाब बचेगा, हिंदुस्तान बचेगा, दुनिया बचेगी। आज के अखबारों में दुनिया के झगड़ों, बुराइयों का ही संग्रह होता है। जैसे कचड़े का घूरा होता है, वैसे ही आज के अखबार का पहला पन्ना, याने दुनिया भर का कचड़े का घूरा।

विकेन्द्रीकरण की योजना

इसलिए अगर कोई योजना करनी है, तो वह देश को बाँटने की योजना होगी। ५ हजार की एक इकाई करनी होगी। उसका स्वतंत्र ग्रामस्वराज्य होगा। उसमें शांति-सैनिक सबसे बराबर परिचय रखेगा। वह सर्वोदय का, सबके भलाई का काम करेगा। सबकी सेवा करेगा। सारे भारत को ७५ हजार इकाई में बाँटना होगा। पंजाब को उसमें बाँटना होगा। उस-उस विभाग में अपना-अपना स्वराज्य चले, यही योजना करनी होगी। इससे दिल्ली और चण्डीगढ़ का बोझ कम होगा। आज कुल बोझ उन्हीं-के दिमाग पर आता है। परिणामस्वरूप उनके दिमाग फट रहे हैं। हर बात सरकार पर लादी जाने से लोग अनाथ बनते हैं। कल ही गाँव के लोग कह रहे थे कि हमारे यहाँ पानी का इन्तजाम नहीं है। स्कूल, दवाखाना, रास्ते—यह सब सरकार को करना चाहिए। याने शादी, हरिजनों का उद्धार, छूत-अछूत-भेद मिटाना, तालीम, खेती, सुधार साहित्य–अकादमी कोश—सब कुछ सरकार करे। तलब, शक्ति का स्रोत सरकार में रहे। किन्तु इससे उनका दिमाग फट जायगा। लोग अज्ञानी रहेंगे। इससे आज जो ३०० करोड़ रुपये का खर्च सेना पर हो रहा है, वह ४ या ५ सौ करोड़ करना पड़ेगा। कल पाकिस्तान अपना खर्च बढ़ाता है, तो हिन्दुस्तान भी अपना खर्च बढ़ायेगा। हम दोनों का बजट अमेरिका बनाता है। अमेरिका का बजट रूस बनाता है और रूस का अमेरिका। मतलब, किसी भी देश में स्वातंत्र्य नहीं रहा है। जहाँ स्वातंत्र्य नहीं, वहाँ निर्भयता भी नहीं है।

हमें अकाल मूरत प्रकट करनी है

अतः यदि हम स्वातंत्र्य चाहते हों, तो हमारे गुरु नानक जैसे "निर्भो निर्वैर की अकाल मूर्त" थे, वैसे 'अकाल मूरत' बनानी होगी। अणु-अस्त्र यह काल मूर्ति है। हमें 'अकाल मूरत' प्रकट करनी है। आज इन्सान का खातमा करनेवाली मूरत बनी है, इसलिए हमें अकाल मूरत की स्थापना करनी है। उससे सबके हृदय एक हो जायँगे। यही कुरान में आया है और यही वेदों ने भी कहा है—'विश्वम् एकम्'। गुरुओं ने भी यही कहा है। परन्तु क्या हम इन पुस्तकों का सही उपयोग करते हैं? उनका अखंड पाठ अवश्य करते हैं। सिखों का ४८ घंटे का पाठ होता है। किन्तु उससे पुण्य मिलेगा, बोध मिलेगा और जीवन में फर्क आयेगा—ऐसा नहीं। जो कुछ लाभ होगा, वह मरने के बाद होगा। जहाँ मर गया, वहाँ अखंड पाठ करते हैं। मरते समय, परलोक के लिए इन ग्रन्थों का उपयोग माना जाता है। इतवार के दिन बाइबिल पढ़ी जायगी और छः दिन शस्त्रास्त्र के चलायेंगे। मुझे नहीं मालूम कि इतवार के दिन शस्त्रास्त्र के कारखाने बन्द होते हैं या नहीं? 'सोल्जर्स किट' में बाइबिल चलती है, ताकि मरने के समय काम आये। लेकिन बाइबिल में कहा है कि 'वैर से वैर नहीं मिटेगा। जिसके हाथ में तलवार होगी, उसका नाश तलवार से ही होगा।' फिर भी ईसाई लोग कहते हैं कि जब तक वह काल्पनिक आदर्शवादी राज्य नहीं होता, तब तक हमें शस्त्रों से सुसज्जित रहना ही होगा। इस तरह बाइबिल भी परलोक के लिए है। ऐसे अमूल्य ग्रन्थ इहलोक के लिए बेकार और परलोक के काम के हैं, यह कितनी विचित्र बात है!

हम कहते हैं कि सब धर्मों ने हमें जो-जो अच्छी चीज दी है, उसे लेना चाहिए। विज्ञान भी कहता है, तुम नेक बनो या मर मिटो। विज्ञान ने ऐसे साधन बनाये हैं कि या तो हम नेक बनें, भले-मनसाही से मसले हल करें या मर जायँ। तीसरा रास्ता विज्ञान ने छोड़ा नहीं। उसका यह बहुत तकाजा चल रहा है कि धर्म की ताकत दुनिया में लाओ और दुनिया को बचाओ। सारे सज्जन मानवता के विचार को लायें और दुनिया को बचायें। अतः इन ग्रन्थों का सच्चा उपयोग इसी लोक में है, यह हम पहचानें।

इसलिए मैं चाहता हूँ कि पंजाब में हर गाँव की इकाई बने, जिसमें सरकार का संबंध नहीं आयेगा। एक-एक इकाई याने स्वतन्त्र राज्य बने। हर जगह ग्राम-स्वराज्य हो। एक-एक इकाई में सेवा करने के लिए शांति-सैनिक रहें। उनके लिए घर-घर सर्वोदय-पात्र हो। ग्राम-स्वराज्य, शांति-सैनिक, सर्वोदय-पात्र—यह हमारी तिहरी योजना है।

दुःख का मूल कारण दुरुस्त करो

आज कुछ हरिजन आये थे। इन दिनों यह 'हरिजन', 'आदिवासी', शरणार्थी, जुलाहे, भूमिहीन, बहनें—इन सबके अपने-अपने अलग-अलग दुःख होते हैं। दस रुपयेवाला सौ रुपये चाहता है। सौ रुपयेवाला हजार रुपया चाहता है। हजारवाला करोड़ और करोड़वाला अरब चाहता है। इसका कोई अन्त नहीं है। दुःख ही दुःख मौजूद है। शारीरिक, मानसिक, दुःख ही दुःख है। इन रोगों के डॉक्टर भी अपने-

अपने एक-एक रोग के स्पेशलिस्ट हैं और उसे ही अच्छा करते हैं, जिससे सारे रोग, दुःख नहीं मिटते। गुरुद्वारा प्रबंधक समिति के स्पेशलिस्ट अपनी ही बात जानते हैं, और कुछ नहीं जानते। सभी अपनी-अपनी जानते हैं, दूसरे की नहीं। लेकिन इसका मूल कारण दुरुस्त होना चाहिए। अपना अपना दुःख दूर करने से कुछ नहीं होगा। मूल कारण यही है कि शरीर में प्राणशक्ति कम है, तो आँख के लिए उपचार करने से कुछ नहीं होगा। जहाँ प्राणशक्ति कम है, वहाँ शरीर में प्राण-शक्ति का कैसे संचार हो—यही देखना होगा। इसलिए मेरे पास ये टुकड़े-टुकड़ेवाले लोग आते हैं (हरिजन, आदिवासी), तो मैं इनसे कहता हूँ कि तुम्हारा मुख्य दुःख यही है कि 'तुम टुकड़े हो।' इसलिए पहले तुम लोगों को एक हो जाना चाहिए। मैं बोल रहा हूँ, मेरी जीभ बोल रही है और आपके कान सुन रहे हैं। वे इसलिए सुनते हैं कि शरीर के साथ जुड़े हैं। अगर मेरी जीभ काटकर यहाँ रख दी जाय, तो क्या मैं बोल सकूँगा? आपके कान काटकर यहाँ रखे जायँ, तो क्या आप सुन सकेंगे? शरीर को छोड़ेंगे, तो कुछ भी नहीं होगा। इस तरह समस्या-समस्या करने से समस्याओं का भण्डार हो जायगा। कुल समस्या यह है कि हिन्दुस्तान में समाज नहीं है। जहाँ भी जाइये, समाज बँटा है, लोग बँटे हैं। समाज है ही नहीं। यही हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा दुःख है। इसलिए अब हिन्दुस्तान में समाज बनाना चाहिए। सबका स्वार्थ एक कर दें, किसीके हित से किसीका हित न टकराये, तो हम सब दुःख मिटा सकते हैं।

आग बुझाने के लिए आग किस काम की?

अब शान्ति-सैनिक के काम का महत्त्व पंजाब को क्या समझाया जाय? भोपाल में दंगा हुआ, हमारे अन्तःकरण में बहुत पीड़ा हुई। लेकिन क्या किया जाय? सीतामढ़ी (बिहार) में दंगा हुआ, यह सुनकर उससे ज्यादा तकलीफ हुई। दो साल हम वहाँ रहे। वहाँ तीन लाख लोगों ने दान दिया, ३२ हजार एकड़ जमीन दान में प्राप्त हुई। इतना क्रांतिकारी काम वहाँ हुआ। लेकिन वहाँ भी हिन्दु-मुसलमानों का दंगा हुआ। कुछ लोग मरे, काफी जखमी हुए। फिर सरकार के लोग वहाँ गये। सरकार गोली चलाती है। चन्द लोगों ने कुछ लोगों को मारा, इसलिए अब सरकार कुछ लोगों को मारेगी, तो उससे क्या होगा? आग बुझाने के लिए आग भेजेंगे, तो कैसे चलेगा? इसलिए शांति-सेना खड़ी करनी होगी। विकेन्द्रित योजना करनी होगी। सर्वत्र छोटे-छोटे समाज अपना राज्य चलायेंगे, तभी ग्राम-स्वराज्य होगा।

◆◆◆

संगरूर जिले के शिक्षकों के बीच

नरवाना (संगरूर) १७-४-'५९

भूदान, ग्रामदान, सर्वोदय-पात्र—सबका स्रोत रामनाम

हमारे देश के बहुत ऊँचे विचार जंगलों में प्रकट किये गये हैं। 'उपनिषद्' जो इस देश के तत्त्वज्ञान की सबसे बड़ी किताब है, जिसकी बराबरी की कोई चीज शायद ही दुनिया में कहीं मिले, जंगलों में ही सोची गयी, जंगलों में कही गयी और जंगलों में ही सुनी गयी। उसके प्रयोग भी जंगलों में ही किये गये। महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा था कि "यहाँ की आरण्यक सभ्यता है।" जंगल में भारत का हृदय विकसित हुआ है, क्योंकि वहीं सृष्टि की विशालता प्रकट होती है। एकांत रहता है। ऐसे एकांत में और पूर्ण शांति में ही नवीन-नवीन विचार सूझते हैं। मेरा अपना अनुभव यही है। मुझे जो सर्वोत्तम विचार सूझे हैं, वे एकान्त में, खुले आसमान के नीचे ही। किसी भी गंभीर विषय पर सोचना हो, चर्चा करनी हो, तो मुझे लाखों लोगों की जरूरत नहीं, शांति और एकाग्रता की ही जरूरत होती है। इसलिए इस सभा के दस मिनिट हमने खोये हैं (सभा में आरंभ में कुछ अशान्ति हुई थी।—सं०)।

जप का स्वरूप क्या है?

चंद रोज पहले शिक्षकों की एक सभा हुई थी। यह दुबारा हो रही है। मेरे लिए तो अच्छा ही है, क्योंकि मेरा तो जप चलता है। गुरू नानक ने भी यही कहा है कि 'मेरा अपना लगातार जप ही चल रहा है।' चिंतन से विचार सूझते हैं। उस पर अमल करने की बात रहती है। उस बीच उन विचारों को बार-बार मन में दुहराते हैं। फिर साथी मिले, तो उनके सामने रख देता हूँ। उनको उपदेश करने के खयाल से नहीं, सहज भाव से रखे जाते हैं। मनमें विचार सूझने के बाद आचरण में लाने के बीच और लाने के साथ-साथ वाणी से बार-बार उनका उच्चारण करना ही उनका जप है। माला लेकर 'जप' करने से 'जप' नहीं होता। जप का अर्थ है विचारों का नित्य निरंतर ध्यान! चित्त में वह नहीं रहता, सहज भाव से वाणी से फूट निकलता है। इस तरह मेरे व्याख्यान जप के रूप में होते हैं। आज भी जप ही करूँगा।

रामजन्म कहाँ और कब होता है?

आज का दिन रामजन्म का दिन माना जाता है। रामजी अंदर रहते हैं। बड़े रमणीय, बड़े सुंदर! उनसे अधिक रमणीय कोई है ही नहीं। दुनिया में जो भी खूबसूरत से खूबसूरत चीज देखने को मिलेगी, उसकी तुलना रामजी की सुन्दरता के साथ नहीं हो सकती। रामजी का नित्य-निरंतर खेल चल रहा है। वे हर एक के हृदय में हैं। जिस मनुष्य के मन में अनेक वासनाएँ हैं, बुरे विकार पैदा होते हैं, उसके अंतस्तल में भी रामजी रहते हैं। ऊपर-ऊपर भले खराब विकार आयें, तो भी अंदर अत्यंत शुद्ध, निर्मल स्थान है। उस गहराई में रामजी रहते हैं। ऐसे अंतर्यामी रामजी का जन्मदिवस नहीं हो सकता। वे अगर जन्मते हैं, तो प्रतिक्षण जन्मते हैं। वे उस वख्त जन्मते हैं, जिस वख्त सर्वोत्तम विचार मनुष्य को सूझता है। जिसकी अन्तरात्मा में वे लीन हो गये, जिस क्षण जिसके अंदर के विकार मिट गये, उसी क्षण उसके हृदय में रामजी का जन्म हो गया, ऐसा समझना चाहिए। कभी न कभी किसीके भी हृदय में रामजी का जन्म होता ही है और वह होते ही उसका काया-पलट हो जाता है। चाहे बुरे विचार हों, परमेश्वर का एक क्षण के लिए भी प्रकट होना, कबूल किया जाय, तो उसी क्षण विचार बदल जाते हैं। पूरे जीवन में तो एकदम क्या बदल होगा, पर उसका आरंभ हो जाता है—शुरूआत हो जाती है। जो मनुष्य दक्षिण की तरफ जा रहा था, उसने मुँह बदल दिया, फेर दिया, उत्तर की ओर किया। फिर वह कभी न कभी हिमालय के पास जायगा ही। इसी तरह एक क्षण भी क्यों न हो, जिसके हृदय में रामजी का जन्म हो गया, तो उसका काया-

पलट हो जायगा। इस तरह का अनुभव सत्पुरुषों के जीवन में आता है। दूसरे भी लोगों के जीवन में यह अनुभव आता है।

रामजन्म से मानव का नया जन्म

उस रामजी का जन्म आज के ही दिन होता है, ऐसा मुझे याद नहीं है। मुझेघर छोड़ने की तीव्र इच्छा थी। इसलिए नहीं कि घर में कोई दुःख था। मेरी माता महान भक्त थी और पिताजी योगी। कोई दुःख नहीं था, फिर भी मन को लगा कि नहीं, परमेश्वर की तलाश में घर छोड़ना चाहिए। मैं बेचैन रहता था। चार-पाँच साल वह विचार मन में चलता रहा। आखिर निश्चय कर लिया और घर छोड़कर निकल ही पड़ा। आजतक उसका पश्चात्ताप नहीं हुआ। इसे मेरे हृदय में रामजन्म हुआ,ऐसा ही मैंने माना। तब से आजतक उसी दिशा में मुसाफिरी चल रही है। आगे आगे बढ़ रहा हूँ। हम अनंत प्रवासी हैं। फिर भी मंजिल अभी दूर है, 'देहली तो बहुत दूर है, यह मशहूर वाक्य है। यह दूरी कायम रहती है, यह मैं अपने अनुभव से समझ गया। एक दफा रामजी का जन्म हुआ, तो पुराना मनुष्य मिट गया। नया मनुष्य बन गया।

रामनवमी की व्यापकता

रामनवमी के दिन क्या हुआ ? एक महामनुष्य अतिप्राचीन काल में हिंदुस्तान में हो गये, उनकी मृत्यु के बाद भारतवर्ष को उनका स्मरण होता गया। धीरे-धीरे वे मनुष्य मिट गये। परमेश्वर के गुणों का ही आभास उनके जरिये देश को हुआ। तो, उन्हें भगवान का अवतार, भगवान का स्वरूप माना गया। इस दिन रामेश्वर में श्रीनगर तक, कच्छ और द्वारिका से लेकर आसाम की आखिरी हद तक यह उत्सव चलता है। यह बहुत ही व्यापक उत्सव है। महापुरुष के उत्सव की जैसी छोटी बात नहीं है। हिन्दुस्तान की सभ्यता में यह बहुत ही गहरा उत्सव है। आज के दिन सुबह से लेकर दिनभर मनुष्य के दिल और दिमाग आज की परिस्थिति से अलग हो जाते हैं। थोड़ी देर के लिए वे देह से भी अलग हो जाते हैं। थोड़े क्षण के लिए अनुभव करते हैं कि हमारी आँखों के सामने रामजी का जन्म हो रहा है। वे हमारे आगे हैं, पीछे हैं, हमारे साथ बैठते हैं, बोलते हैं, शरारत करते हैं। वे हमारी संगति में रहना चाहते हैं। खैर ! हम भगवान की संगति में रहने की इच्छा करें, यह बहुत पवित्र इच्छा है।

मैं इन आँखों से रामजी को निहार रहा हूँ

मैंने देखा है, मेरी माँ आज के दिन दोपहर में १२ बजे, 'रामजी का जन्म हो रहा है' ऐसे खयाल से ध्यान में बैठ जाती थी। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहती थी। मैं कभी-कभी विनोद में उससे पूछता था—'कैसे जन्म हुआ आज रामजी का ? कहीं दीखते तो नहीं हैं।' वह कहती थी—"बेटा ! दीखेंगे (विनोबाजी रुक गये, आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी), तुझे भी दीखेंगे।" आज मुझे कहने में बहुत खुशी होती है कि उसके आशीर्वचन के अनुसार मैं आँखों से रामजी को देख रहा हूँ। आज के दिन तो खैर देखता ही हूँ, पर बहुत दफा देखता हूँ। कोई दिन शायद ही ऐसा कोरा जाता हो, जिस दिन उसे नहीं देखता। इन दिनों तो खाली दिन बिलकुल ही नहीं जाता। रामजी का दर्शन अपनी आँखों के सामने मैं रोज करता हूँ।

मेरे राम आप ही

मैं अपने में ऐसी कोई ताकत महसूस नहीं करता, जिसके बल पर मेरी यह भूदान-यात्रा चल सके। यह साक्षात्कार ही हुआ है, जिसे कुरान में "अयनुल यकीन" कहते हैं। निश्चित ही मैं रामजी की मूर्ति देखता हूँ। आज अभी आप मेरे सामने बैठे हैं, तो यह कोई मनुष्य की मूर्तियाँ हैं—ऐसा मैं नहीं मानता। बल्कि इतने विविध रूप धारणकर रामजी, जो मेरे अन्तर में रहते हैं, मुझे, मेरी आँखों को दीखने के लिए सामने बैठे हैं।

नामी से नाम बड़ा क्यों ?

मैं शिक्षकों के सामने बोल रहा हूँ। क्या शिक्षक रामकथा से अपरिचित होंगे ? गंगाजल से जो पावनता मिलती है, सूर्यनारायण की किरणों से जो पावनता मिलती है, स्वच्छ निर्मल वायु से जो पावनता मिलती है, उसी प्रकार की पावनता रामकथा से लोगों ने महसूस की। लेकिन तुलसीदासजी ने एक बहुत बड़ा विचार हम लोगों को दिया कि 'रूप से नाम श्रेष्ठ है।' रामजी का रूप एक जमाने में प्रकट हुआ था या जिन भक्तों के हृदय में वह प्रकट होता है, वह सुन्दर है। किंतु उस रूप से भी उनका नाम बहुत बड़ा है। नाम तो हम अपने मुख में, कंठ में रख सकते हैं, मानो हमारे हाथ में रामजी आ गये। अगर रामनाम नहीं होता, तो जिस तरह बच्चा भी आज रामजी को हाथ में पकड़ सकता है, उनका नाम ले सकता है। सबका कल्याण करनेवाला वह नाम ही एक ऐसा है, जिसने करोड़ों पापियों का उद्धार किया है। काल्पनिक खयाल से संतों ने यह बड़ाई की, ऐसा मत समझो। मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि यह जो बड़ाई की है, वह कम ही है। नाम की महिमा बहुत ज्यादा है।

शिक्षक विद्यार्थियों को रामरूप मानें

आज के दिन शिक्षकों से मेरी यही प्रार्थना है कि आप कुल विद्यार्थियों को रामजी की आकृति समझें। उस रूप में रामजी खड़े हैं, और वे आपसे सेवा लेना चाहते हैं, यही समझें। उनको कभी न मारें, न पीटें, उनकी खूब सेवा करें। उनके साथ खूब खेलें, कूदें, नाचें, गायें। बच्चों का हृदय जितना सरल होता है, उतने सरल हृदय से काम करें। आप उनके सवालों का जो जवाब नहीं दे सकते, उसके बारे में कह दीजिये कि आज नहीं, कल बतायेंगे। अपना अज्ञान उनसे न छिपायें। कभी उन पर गुस्सा न करें। रात और दिन जो भी चिंतन आप करें, खायें, हजम करें, पढ़ें—सबको निचोड़कर बालक रामको, अर्पण करना है, यही समझें।

मुझे तो इसके बिना चैन ही नहीं है। रात-दिन मेरे मन में ये ही विचार आते हैं। भूदान, ग्रामदान, सर्वोदय-पात्र ये सब बातें एक रामनाम में से ही निकलती हैं—यही मेरा अनुभव है।

◆◆◆

अनुक्रम

१. सबका स्वार्थ एक करने की योजना...
समाना २२ अप्रैल '५९ पृष्ठ ३५७
२. भूदान ग्रामदान सर्वोदय-पात्र...
नरवाना १७ अप्रैल '५९ ,, ३५९

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।